जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी!

-ब्र.कु.अनुज, दिल्ली

कहा जाता है, ''नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'', अर्थात् नारी की जहां पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। यह एक आधार है या सिर्फ धार्मिक नारा है, या एक सर्वविदित कथन है। इस भावना को उजागर करने पर प्रकाश डाला जाए तो शायद कितनी पुस्तकें लिखनी पड़ जाएं, फिर भी नारी की महिमा लिखी नहीं जा सकती।

फिर भी उस नारी को जो बच्ची, आर्या, भगिनी, माता और गुरु की भूमिका निभाती आई है, उसे कितनी समस्याओं का आज समाज में सामना करना पड़ता है तथा उन समस्याओं का आधार तथा समाधान क्या हो सकता है, इन बातों पर एक संक्षिप्त प्रकाश डाला जा सकता है।

''नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'', अर्थात् नारी की जहां पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। यह एक आधार है या सिर्फ धार्मिक नारा है, या एक सर्वविदित कथन है।

पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती

पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती देने के लिए तथा संसार में संतुलन कायम करने के लिए सशक्त महिलाओं की आवश्यकता है। चूंकि दुनिया के लोग सभी मान्यताओं को प्राचीन धार्मिक प्रवृत्तियों के आधार पर ही देखते हैं, तो आइए हम वहीं से शुरु करते हैं।

यदि नारी की गरिमा तथा उसकी सम्पूर्णता को लें तो सबसे पहले हमें नारी तथा पुरुष का सम्पूर्ण अर्धनारीश्वर अथवा चतुर्भुज के रूप में दिखाया गया स्वरूप, जिसमें स्त्री तथा पुरुष के प्रति समान भाव को दर्शाया गया को देखना चाहिए। इस सोच को चुनौती देने के लिए कि स्त्री पुरुष का कंधे से कंधा मिलाकर चलने तथा समानता के अधिकार व किसी भी प्रकार से स्त्री को पुरुष से कम न माना जाय।

अब हम इसके वैज्ञानिक आधार को भी देखते हैं, कि ऐसा क्यों दिखाया है? मान्यता है कि हमारे अन्दर दो मस्तिष्क हैं, एक दायां तथा दूसरा बायां। दायां मस्तिष्क स्त्री लिंग का सूचक है तथा बायां मस्तिष्क पुरुष लिंग का सूचक है। पुरुष मस्तिष्क या बायें भाग को तार्किक, साहसी, निर्णायक माना जाता है वहीं दायें भाग को भावनात्मक व काल्पनिक माना जाता है। दोनों का संतुलन एक सम्पूर्ण मानव को दर्शाता है। अत: यह एक आत्मा को दर्शाया गया।

आज समाज में इसे संतुलित करने हेतु लोगों ने बायें तथा दायें दोनों मस्तिष्क या स्त्री तथा पुरुष की शादी को मान्यता देनी शुरु की। और जब यह बढ़ना शुरु हुआ तो उसको जन्म से ही लड़के या लड़की के अन्दर यह आधुनिक सोच भी डाल दी गई कि तुम पुरुष हो तो तुम्हें कैसा होना चाहिए और तुम स्त्री हो तो तुम्हें कैसा होना चाहिए? आज यही मान्यता समाज में प्रचलित होती जा रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब कोई बच्ची या बहन अपने भाई को थप्पड़ मार दे या डांट लगा दे तो माता-पिता ही उस बहन को उसी झुकाव से कहेंगे कि आप स्त्री हो और स्त्री को भावुक तथा सहनशील होना चाहिए तथा उसे अपने भाई के साथ शालीनता से पेश आना चाहिए और बच्चे को कहेंगे आप पुरुष हो तो आपको साहसी होना चाहिए।

इसी सोच ने आज पुरुष को पुरुषत्व का भान तथा स्त्री को पूर्णत: नारीत्व का भान दिलाया है। इस मानसिकता के कारण आज विकास एकतरफा है।

सभी धर्मशास्त्रों में नारियों के प्रति घृणा की भावना प्रदर्शित की गई है, वहीं पुरुषों के लिए कोई कटाक्ष नहीं है। महर्षियों तथा मनीषियों द्वारा लाक्षणिक अथवा सांकेतिक भाषा में प्रकट किए गए कुछ सूक्ष्म आध्यात्मिक सत्यों को टीकाकारों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है। और प्राय: यह खण्डित सत्य समाज में धार्मिक मनोवृत्ति एवं मान्यताओं का स्वरूप ले लेते हैं।

कुछ उदाहरणों के द्वारा हम आपको स्पष्ट करते हैं। जैसे आत्मा को सर्वोच्च सत्ता की पत्नी के रूप में माना गया तदनुसार आत्मा को सुहागिन कहा जाता है। इस बात को टीकाकारों ने इस प्रकार से लिया कि जब तक कोई नारी किसी पुरुष से विवाह नहीं कर लेती है तब तक वह सुहागिन नहीं बन सकती है। उन आत्माओं की शास्त्रों में चर्चा की गई है, जिन्होंने स्वयं को पूर्णत: सर्वोच्च सत्ता पर नि:स्वार्थ भाव से अर्पित कर दिया, इसी प्रकार एक महिला से आशा की जाती है कि वह खुद को अपने पति के लिए पूर्णत: समर्पित कर दे, उसके किसी भी व्यवहार के प्रति कोई प्रश्न आदि न पूछे।

पुरुष 'चैतन्य' तथा नारियों को 'प्रकृति' माना जाता है।

पुरुष को यह शिक्षा दी जाती है कि उन्हें समाज में प्रभावशाली स्थिति प्राप्त है तथा स्त्रियों को सेविका के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार की दुनिया में स्त्रियों को एन्द्रिक सुखप्राप्ति के साधन के रूप में देखा जाता है। जब सूक्ष्म आध्यात्मिक सच्चाइयों की भौतिकवादी समीक्षा की जाती है तब उनका मूल आध्यात्मिक अर्थ लुप्त हो जाता है।

पूर्णत: इस सत्य पर भी लोग विश्वास करते हैं कि नारी शारीरिक संरचना के आधार पर कमज़ोर तथा पुरुषों की तुलना में हीन हैं, वह एक बोझ है तथा पारिवारिक स्रोतों का उपभोग करती हैं। उन्हें उत्पादकर्ता नहीं माना जाता है। महिलाएँ घरेलू उत्तरदायित्वों के साथ उन सभी कार्यों को सम्पन्न कर सकती हैं, जो पुरुष करता है।

एक सशक्त महिला होने के लिए कुछ निदानों पर चर्चा की जानी चाहिए। कहा जाता है, मांगने से, शिकायतें करने से किसी ने भी शक्तियाँ प्राप्त नहीं की, सबसे पहले स्वयं को संतुष्ट एवं सशक्त बनाना होगा।

आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनना होगा

महिलाओं को सर्वप्रथम आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनना होगा, इससे उनकी मनोस्थिति अति सुदृढ़ होगी तथा उन्हें अपने पर नाज़ भी होगा। वे पुरुषों की तुलना में शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक रूप से कम नहीं है क्योंकि आत्मा ने वैसा शरीर लिया है तथा आत्मा ही शक्तिशाली तथा कमज़ोर बनती है। इससे महिलाओं के अन्दर जागरुकता आयेगी तथा वह अपने अधिकारों की शिक्षा, आंतरिक संवेदना तथा बौद्धिक परखशक्ति तथा अपने पूर्वाभासों को स्पष्ट रीति से समझेगी।

एक सशक्त महिला, सर्वप्रथम अपने अर्थात् स्वयं को देखेगी, तथा सूक्ष्म स्तरीय वृत्ति से अनेकानेक बदलाव लाने का प्रयत्न कर सकेगी।

कहते हैं कि वर्ग, जाति की सीमा से परे सभी जगहों पर महिलाओं के खिलाफ, शुरुआत से ही भ्रूणहत्या, शिशु हत्या, अल्प आयु में जबरन विवाह आदि समस्याएँ एक भयावह रूप ले चुकी हैं। साथ ही साथ घरेलू हिंसा जिसमें महिला भ्रूण हत्या, माँ बनने वाली महिलाएँ विभिन्न प्रकारों से शिकार बनती है। परम्परागत पारिवारिक पदानुक्रम में महिलाएँ अपने से छोटी महिलाओं को प्राय: नीची नज़र से देखती हैं। बहुत सारी महिलाएँ इस बात से अनजान रहती हैं कि उनसे कोई भूल हो रही है। एक बहू के मन की असुरक्षा तब बढ़ जाती है जब नई बहू अधिक सुंदर, अधिक कुशल, अधिक बुद्धिमान एवं आत्मविश्वासी होती है। उसकी असुरक्षा उसकी निष्क्रियता में परिवर्तित हो जाती है जिसे भूल से उसकी ईर्ष्या मान कर दंडित किया जाता है। ऐसे अनेक पहलू हैं, जिनसे महिलाओं का उत्पीड़न सामने आता है।

इन उपरोक्त मामलों पर रोकथाम के लिए एक संस्था, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पूर्णत: प्रयासरत है। यहां महिला सशक्तिकरण तथा उन्हें समाज के सभी क्षेत्रों में कदम रखने का एक उचित अवसर प्रदान किया जाता है क्योंकि महिलाओं के उत्थान में परमात्म-शक्ति का साथ होना अति आवश्यक है। उनका आत्मबल, गौरव तथा खोया हुआ सम्मान, परमात्मा पिता ही दिला सकते हैं। जब नारी जगत जननी बन जग का उत्थान करने के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देगी तो स्वर्ग की ओर ले जाने के लिए ही मार्ग प्रशस्त करेगी।

अगर जन्म के समय एक महिला शिशु को प्रसन्नता एवं प्रेम से अपनाया जाता है, तो उसके मौलिक अधिकारों के तहत उसे शिक्षा, खुशी एवं संतुष्टता का स्रोत बनाया जा सकता है। सती अनुसूया,सती सावित्री व गार्गी जैसी विदुषी नारियों की पावन भूमि भारत में माता तथा मातृभूमि को स्वर्ग से भी अधिक सम्मान दिया जाता है। पालना तथा पालने से लेकर, मृत संजीवनी बन अनेकों को जीवदान व उनकी ज्ञानक्षुधा को शांत करने वाली, नारी की आज मनोदशा को देखकर सभी ने जैसे एक चुप्पी साध ली है, न खुद जाग रहे हैं, ना जगा रहे हैं। उठो जागो उन नारियों के प्रति जिन्होंने सदा आपको जीवन देने का ही कार्य किया है। देखो ज़रा ऊपर की ओर कोई आपको बड़ी चातक नयनों से निहार रहा, कह रहा कब आओगे, बरसाओगे स्वाति-नक्षत्र रूपी सुरक्षा की बूंद।

आत्म-विश्वास बढ़ायें

2000 वर्षों के इतिहास में नारी को कोई महत्वपूर्ण रोल नहीं मिला तो पुरुष की दृष्टि यही रही कि नारी बच्चे पैदा करने वाली मशीन व भोग-विलास का साधन है। चाहे वह कमाती भी हो या पढ़ी-लिखी क्यों न हो। तो नारी का सिर कैसे ऊँचा उठता। यद्यपि बहुत धर्म-स्थापक, सुधारक हुए, तो भी संसार का पतन होता गया। स्वयं नारी भी यही मानकर चलती रही और परिणामस्वरूप उसका आध्यात्मिक बल क्षीण होता गया और वो अत्याचार, बलात्कार और पापाचार को सहन करना अपना धर्म समझती रही। आज आवश्यकता इस बात की है कि नारी को इस दलदल से निकाला जाए। उसे ऐसी विधि बताई जाए कि वो आत्मा में शक्ति कैसे बढ़ाए और दृढ़ता से कैसे आगे बढ़े। उसमें आत्म-विश्वास भरा जाए, कल्याणी और वरदानी बनने का लक्ष्य दिया जाए ताकि वो स्वयं को दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी इत्यादि के वंशज मानकर श्रेष्ठता के मार्ग पर चले। सशक्त बनाने का अध्यात्म ही एकमात्र उपाय है। जो प्राचीन काल में अपनी संस्कृति थी उसमें महिलाओं को देवी माना जाता था। उस पुरातन शक्ति को पुन: लौटाने के लिए आध्यात्मिकता ही एक सशक्त मार्ग है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने यह अभियान 78 वर्षों से छेड़ा हुआ है और उसे तब-तक सम्पन्न नहीं माना जाएगा जब-तक कि नारियां खुद सशक्त होकर समस्त विश्व को सशक्त न कर दें।

- ब्र.कु. चक्रधारी, ब्रह्माकुमारीज़ महिला प्रभाग की अध्यक्षा एवं निदेशिका, रशिया

खुद की खुद पर पाबंदियां

सुनीता विलियम्स जो स्पेस में 322 दिन बिताकर, जो कि एक महिला एस्ट्रोनॉट द्वारा सबसे लंबा समय है, दो वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ चुकी हैं। वे यह भी कहती हैं कि इस प्रोफेशन में भले ही पुरुषों का दबदबा था परन्तु उन्हें कभी एक महिला होने की वजह से कोई अधिक दबाव नहीं महसूस हुआ। वे कहती हैं कि महिलाएं स्वयं ही खुद पर पाबंदियां लगा देती हैं। मिसाल के तौर पर स्पेसशिप को यह नहीं पता कि आप पुरुष हैं या महिला हैं। मेरे आदर्शों में सबसे ऊपर मेरी माँ का नाम और फिर मदर टेरेसा का नाम आता है।

- सुनीता विलियम्स, पूर्व एस्ट्रोनॉट एवं अमरीकी नौसैनिक